Swadeshi Research Foundation

A MONTHLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Published by:
Swadeshi Research Foundation & Publication
Sanjeevani Nagar,
Garha, Jabalpur (M.P.) - 482003

Scanned with CamScan

Contents

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	[illegible]	[illegible]	[illegible]
2	[illegible]	[illegible]	[illegible]
3	[illegible]	[illegible]	[illegible]
4	[illegible]	[illegible]	[illegible]
5	[illegible]	[illegible]	[illegible]
6	[illegible]	[illegible]	[illegible]
7	[illegible]	[illegible]	[illegible]
8	[illegible]	[illegible]	[illegible]
9	[illegible]	[illegible]	[illegible]
10	[illegible]	[illegible]	[illegible]
11	[illegible]	[illegible]	[illegible]
12	[illegible]	[illegible]	[illegible]
13	[illegible]	[illegible]	[illegible]
14	[illegible]	[illegible]	[illegible]
15	[illegible]	[illegible]	[illegible]

Scanned with CamScanner

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Vol. – 5, No. - 11 Sep. 2018
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-3.9 Research Journal

समावेशी शिक्षा : माता–पिता व शिक्षक की भूमिका

डॉ. शकीला खान
(अतिथि शिक्षक), शिक्षा शास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर

सारांश :– समावेशी शिक्षा एक शिक्षा प्रणाली है इसमें विशेष शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक सामान्य छात्र और एक अशक्त या विकलांग छात्र को समान शिक्षा प्राप्ति के अवसर मिलते है।

समावेशी शिक्षा का अर्थ लोग यह समझते है इसमें विकलांग बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा दी जाती है पर ऐसा नहीं है वास्तव में समावेशी शिक्षा केवल विकलांग बच्चों तक नहीं है बल्कि इसका अर्थ किसी भी बच्चे का बहिष्कार न होना भी है।

अमेरिका विद्वान सैम्युअल ग्रिडले होवे ने दृष्टि व श्रवण रूप से बाधित बालकों की शिक्षा को सामान्य बालक की शिक्षा के साथ देने पर बल दिया ताकि विकलांग बालक भी हर परिस्थिति में समायोजन कर सके।

विशिष्ट या सामान्य बालकों के मार्गदर्शन हेतु शिक्षक के चार समूह होते है, घर के शिक्षक, समाज के शिक्षक, खेल के शिक्षक, विद्यालय के शिक्षक इन चारों शिक्षकों की भूमिका अपने आप में अतुल्यनीय है यह चारों शिक्षक एक दूसरे के साथ सह सम्बन्ध बनाये रखकर समावेशी शिक्षा के उद्देश्य को शिखर तक ले जाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते है। शिक्षक समाज के वंचित हिस्से को सम्पन्न हिस्से में मिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है शिक्षक ही बालक की कमजोरी को दूर कर शिखर तक लाने में अपना योगदान देते है माता पिता के सक्रिय भागीदारी वास्तविक रूप से किसी भी किसी भी संस्था का चेहरा बदल सकती है। बच्चे को स्वतंत्र शिक्षार्थी बनाने में इसकी सबसे ज्यादा जरूरत पड़ती है।

आज आवश्यकता है सभी को विस्तृत दृष्टिकोण बनान की ताकि विकलांग व अन्य किसी भी प्रकार की विशेषता वाले बालक शिक्षा से वंचित नहीं हो पाये सभी को शिक्षा का समान अधिकार मिलना चाहिए और इस अधिकार को प्राप्त करवाने में शिक्षा व माता पिता की अहम् भूमिका होती है। समावेशी शिक्षा के सपने को साकार करने में सभी मानव जाति को आगे आना होगा।

डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार – शिक्षा समाज का गौरव होता है। वह पीढ़ी दर पीढ़ी बौद्धिक संस्कृतियों और तकनीक कौशलों को पहुंचाने में मुख्य भूमिका अदा करता है और सभ्यता के दीपक को जलाये रखता है।

समावेशी शिक्षा एक आधुनिक शिक्षा प्रणाली है वह प्रणाली है जिसके अन्तर्गत विशिष्ट क्षमता वाले बालक और मन्दबुद्धि अंधे बालक तथा शक्तिशाली बालकों को ज्ञान प्रदान किया जाता है। समावेशी शिक्षा का अभिप्राय ऐसी शिक्षा प्रणाली से है जिसमें सभी छात्रों को बिना किसी भेदभाव के सीखने सीखाने के समान अवसर प्रदान किये जाते है। पहले विकलांग तथा विशिष्ट बालकों के लिए अलग–अलग शिक्षा की व्यवस्था रहती थी। लेकिन भारतीय संविधान किसी भी प्रकार के भेदभाव को मान्यता प्रदान नहीं करता है इस भेदभाव को मिटाने के उद्देश्य से समावेशी शिक्षा प्रचलन में आई समावेशी शिक्षा का उद्देश्य सभी प्रकार के बालकों को एक समान शैक्षिक अवसर प्रदान करना है ताकि बालक आत्मनिर्भर होकर मुख्यधारा में शामिल हो सकें।

शिक्षा की मुख्यधारा के प्रत्यय का श्रेय सैम्युअल ग्रिडले होवे को जाता है जो अमेरिका विद्वान है इन्होंने दृष्टि व श्रवण रूप से बाधित बालकों के शिक्षण में रूचि ली। होवे के अंधे बालकों की शिक्षा की सामान्य विद्यालय में शिक्षा देने पर बल दिया ताकि समाजिक समायोजन के अवसर प्राप्त हो सके। सैम्युएल होवे ने सामान्य विद्यालयों में अपने बालकों की शिक्षा के विषय पर अधिक बल दिया। 1975 में अमेरिका में शिक्षा की मुख्यधारा ने प्रत्यय को प्रारंभ किया तथा सभी अंपगों के लिए शिक्षा के बारे में एक्ट भी बना दिया गया।

शिक्षा की मुख्य धारा का अर्थ बाधित (पूर्ण रूप से अपंग नहीं) बालकों की सामान्य कक्षाओं में शिक्षा व्यवस्था करना है। यह समान अवसर मनोवैज्ञानिक सोच पर आधरित है जो व्यक्तिगत योजनाओं के दौरान उपयुक्त सामाजिक मानवीयकरण और अधिगम को बढ़ावा देते है।

Scanned with CamScanner